International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

उत्तरी राजस्थान के नहरी सिंचित क्षेत्र से बदलता सामाजिक व सास्कृतिक प्रतिरूप

श्रीराम पंवार, शोधार्थी जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

शोध सारांश

उत्तरी राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर परियोजना (आई.जी.एन.पी.) जैसे सिंचाई योजनाओं के प्रभाव से पारंपरिक शुष्क और वर्षा–आधारित कृषि पद्धति में भारी बदलाव आया है। सिंचाई की सुविधा से भूमि उपयोग में परिवर्तन हुआ, जिससे कृषि क्षेत्र का विस्तार, नकदी फसलों का उत्पादन, और नई कृषि तकनीकों का प्रयोग बढ़ा। इसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त किया और सामाजिक संरचना में भी व्यापक परिवर्तन लाए। कृषि से आय बढ़ने पर लोगों की जीवनशैली, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और उपभोक्ता व्यवहार में सुधार देखने को मिला। जातिगत व सामाजिक संबंधों में भी लचीलापन आया, और सामाजिक गतिशीलता को बल मिला। बाहरी प्रवासियों का आगमन और नई आर्थिक गतिविधियाँ क्षेत्र की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता को भी प्रभावित कर रही हैं। हालाँकि, इस परिवर्तन के साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं जैसे जल संसाधनों पर दबाव, भूमि क्षरण और पारंपरिक जीवन मूल्यों का क्षय।

परिचयः–

राजस्थान के उत्तरी छोर पर अवस्थित श्रीगंगानगर व हनुमानगढ जिले आर्थिक व सामरीक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण जिले हैं। जिलों में नहरी सिंचाई परियोजनाओं से यहाँ कृषि में व्यावसायीकरण, तकनीकी विकास, बढ.ती जनसंख्या के साथ कृषि भूमि शस्य वैविध्य में भी भारी परिवर्तन आया हैं। जिलों में कृषि सिंचित क्षेत्र लगभग 36.50 लाख हैक्टयर हैं, जो कि सम्पूर्ण राजस्थान का 10.67 प्रतिशत बनता हैं। यहाँ गंगनहर, भांखडा नहर, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, घघग्र नदी, गंगकैनाल, राजीव गांधी सिद्धमुख नोहर परियोजना से सिंचाई होती हैं। जिलों में मृदा दोमट से चिकनी, पीले भूरे रंग की चूनायुक्त हैं। अनेक स्थानों पर इन मिट्टियाँ में रेतीली भी मिट्टिया भी मिली हुई हैं। सामान्यतः यहाँ की मिट्टियों में घुलनशील लवण व सोडियम की मात्रा अधिक हैं।

अध्ययन क्षेत्र :–

गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले 28°40′ से 30° 6′ उत्तरी अक्षांश तथा 72°30′ से 75°30′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित हैं। गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले की दक्षिणी सीमा में चूरू व बीकानेर उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान का बहावलपुर जिला, उतर पूर्व में पंजाब का फिरोजपुर व मुक्तसर जिला , हरियाणा का सिरसा, फतेहाबाद व हिसार जिले की सीमा लगती हैं। जिलों का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 21259.74 वर्ग किलोमीटर हैं, जो कि राज्य का 6.25 भू–भाग आवृत करता हैं। जिलों की समुद्रतल से औसत ऊँचाईं 166 से 227 मीटर के मध्य हैं, जिलों में दक्षिणी पश्चिमी भाग में 100 मिलीमीटर और पूर्वी भाग में लगभग 350 मिलीमीटर वर्षा होती हैं। इस क्षेत्र में उच्चत्तम दैनिक औसत तापमान जनवरी में 20.5 डिग्री सेल्शियस से जून में उच्चत्तम 42.1 डिग्री सेल्शियस तक रहता हैं। इसी प्रकार निम्नतम तापमान दैनिक औसत तापमान जनवरी में 4.7 डिग्री सेल्शियस से जून में 20 डिग्री सेल्शियस तक रहता हैं। जिलों में 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 3749170 है। जिसमें श्रीगंगानगर 1969520 व हनुमागढ़ में 1779650 हैं। जिलों में लिगांनुपात श्रीगंगानगर में 887 व हनुमानगढ़ में 906 हैं। जिलों में जनघनत्व श्रीगंगानगर में 184 व हनुमानगढ़ में 176 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हैं।

परिकल्पनाः–

जिलों में नहरी सिंचाई परियोजनाओं ने आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। जिससे क्षेत्र के सामाजिक (परिवार, रीति–रीवाज व त्यौार, खान–पान, वेषभूषा एवं मनोरंजन भारी बदलाव आया हैं।

उदेश्यः–

जिलों में नहरी सिंचाई परियोजनाओं द्वारा हुए भू–परिवर्तन से परिवार, रीति–रीवाज व त्योहार, खान–पान, वेषभूषा एवं मनोरंजन आऐ बदलाव का अध्ययन करना।

परिवार–

चयनित शोध क्षेत्र में भू–उपयोग व शस्य गहनता में सुधार तथा जनसंख्या में उतरोत्तर वृद्धि से परिवारों में भारी परिवर्तन आया है। जनसंख्या के उतरोत्तर वृद्धि होने से वृहत आकार के भू–जोत मध्य आकार में तथा मध्यम आकार के भू–जोत छोटे आकार में परिवर्तित हो गए हैं, जिससे संयुक्त परिवारों का विभाजन हुआ है। संयुक्त परिवार टूटकर एकांकी परिवार में परिवर्तित हो गए। क्षेत्र में वर्ष 1980 में (50. 0) आकार के वृहत भू–जोत थे। वर्ष 1980 के बाद इन बड़े आकार के भू–जोतों में कमीं आई है। वृहत

आकार के जोत टूटकर लघु, मध्यम व छोटे आकार के हो गए हैं। दोनों जिलों में वर्ष 1980 के बाद राज्य व केन्द्र सरकार की परिवार कल्याण योजनाओं से जनसंख्या वृद्धि दर में 1971 की तुलना में 17. 01 की गिरावट हुई है। 1981 के बाद वर्ष 1991, 2001 व 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर में उतरोत्तर गिरावट आई है। वर्ष 1980 के बाद केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा परिवार कल्याण के लिए दिया गया नारा 'हम दो हमारे दो' से जनसंख्या वृद्धि में भारी गिरावट आई है। इसके साथ–साथ षिक्षा के स्तर में वृद्धि, आर्थिक स्थिति में सुधार, जनसंख्या नीति, सामाजिक कुरीतियों आदि में व्यापक सुधार आया है। अतः शोध क्षेत्र में वर्ष 1980 के बाद भू–जोतों के विभाजन में कमीं आई है। वृहत लघु व मध्यम आकार के जोतों में मामूली परिवर्तन आया है, जबकि 2.0 हैक्टेयर से कम आकार के जोतों में अधिक परिवर्तन मिलता है। इस प्रकार जोतों के आकार में परिवर्तन से संयुक्त परिवार टूटकर एकांकी हो गए हैं, अतः शोध क्षेत्र में भू–उपयोग व शस्य गहनता का अत्यधिक प्रभाव परिवार पर पड़ा है।

रीति–रीवाज व त्योहार–

आलोच्य जिलों में भू–उपयोग व शस्य गहनता से आर्थिक स्थिति में सुधार आया है, परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। अतः आर्थिक स्थिति में सुधार व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से रीति–रीवाजों में अत्यधिक प्रतिस्पर्द्धा आई है व पाष्चात्य संस्कृति और आधुनिकता का समावेष अधिक हुआ है। वर्तमान में तीज, त्योहार, विवाह–षादियों, धार्मिक समारोह या जलवा पूजन में जो गीत परम्परागत गाये जाते थे, उनकी जगह आधुनिक गीतों ने ले ली है। तीज के त्यौहार पर गांव के बड़े–बड़े पेड़ों नीम, बबूल पर महिलाएँ झूला डालती थी। वर्तमान में गांव में अब पहले जितने पेड़ भी नहीं रहे, जब से विद्युत का गांव में आना हुआ तब से पेड़ों का कटना शुरू हो गया। पहले कोई ऐसा घर नहीं था, जिसकी बाखल में नीम, बबुल या अन्य का पेड़ न लगा हो। इन पेड़ों के नीचे गर्मी के दिनों में चारपाई डालकर बुजुर्ग बैठते थे और महिलाएँ भी आपस में बाते करती थी। गांव के बुजुर्ग व्यक्ति इन पेड़ों के छांव में चोपड़, ताष आदि खेल खेलते थे। तीज के मौके पर अब झूले घर के बरामदे में लोहे की गाडर पर डालते हैं या फिर एक–एकाध पेड़ बचा हुआ है, वहाँ झूले डालकर इस त्यौहार की परंपरा को निभा दिया जाता है। तीज पर महिलाएँ एकजुट होकर गीत गाती थी। महिलाओं की लोकगीतों पर इतनी अच्छी पकड़ थी की आस–पास की अन्य महिलाएँ भी इन गीतों का साथ देती थी। अब इन गीतों को गाने वाली महिलाएँ काफी बुजुर्ग हो चुकी हैं और नयी पीढ़ी की महिलाओं को इन गीतों के बारें में न तो ज्ञान है और न ही इन गीतों को समझना या गाना चाहती हैं। वर्तमान में फिल्मी गीतों या पंजाबी गीतों का अधिक प्रचलन है, क्योंकि क्षेत्र की सीमा पंजाब से लगने के कारण हमने अधिकांषतः पंजाबी संस्कृति को अपना लिया है। अब तो यदि घर में कोई जागरण या रात जगानी है तो गीतों को गाने के लिए उन महिलाओं का मिलना ही मुष्किल हो गया है जिन्हें ये लोक गीत आते हैं। गांव में अब विवाह–षादियों या घरों के अन्य धार्मिक समारोह या जलवा पुजन आदि में जो गीत परम्परा के अनुसार गाये जाते थे, उन्हें गाने के लिए गांव की बुजुर्ग महिलाओं को घर से बुलाकर लाना पड़ता है। नयी पीढ़ी की महिलाएँ इन गीतों को सीखना नहीं चाहती। धीरे–धीरे तीज त्यौहारों पर राय लेने वाले भी विलुप्त से होते जा रहे हैं, कुछ महिलाएँ लोकगीतों को गाना जानती है उनको जब लोग घर से बुलाकर लाते हैं तो पैसे भी देते हैं ताकि उनका धार्मिक कार्यक्रम विधि–विधान से पूर्ण हो सके। गांव में कच्चे मकान अब गिने–चुने ही रह गए हैं। दोनों जिलों के जिला मुख्यालय के आस–पास के गांव में कोई भी कच्चा मकान नहीं मिलता। क्षेत्र के दुरवर्ती गांव में कई मकान कच्चे हैं, इन कच्चे मकानों की लिपाई गोबर से हुआ करती थी। गाय का गोबर और उसमें लाल मिट्टी डालकर इन घरों की लिपाई की जाती थी। इससे पूरा वातावरण घर आंगन शुद्ध रहता था, कच्चे आंगन पर गोबर की लिपाई व आंगन के बीच तुलसी का पौधा घर के वातावरण को और भी शुद्ध सात्विक बनता था। अब घर के आंगन की तुलसी किसी कोने में गमले में रखी जाती है, कई बार तो इसमें हम पानी डालना भी भूल जाते हैं। गावं में कई घरों में तो तुलसी ही नहीं मिलती है। क्योंकि हमने इन परम्पराओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है जो हमारी सभ्यता संस्कृति का एक अभिन्न अंग थी। कच्चे घरों की लिपाई के बाद उन पर माँडने बनाने की परम्परा समाप्त हो गई है, विषेषकर गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में माँडने आदि बहुत कम बनाए जाते हैं, क्योंकि अब लोगों ने घर पक्के बना लिये और मार्बल लग चुका है। इन कच्चे घरों के आंगन में एक तरफ पलिंडा जो कच्ची ईंटो से बनाया जाता, और उसमें बालू रेत डाल दी जाती थी और फिर उसे चारों ओर से गोबर की सहायता से लीप देते थे। इस तरह तैयार हुए इस पलिंडे में मटके रखे जाते थे, जिनमे पानी भरा होता था। भीषण गर्मी में भी इस पलिंडे का पानी कभी गर्म नहीं हुआ करता था, क्योंकि पलिंडे में डाली गयी बालू रेत पानी गिरने के कारण मटके को शीतलता प्रदान करे रखती थी। अब गांव के घरों में इस तरह के पलिंडे कम ही मिलते हैं, सही मायने

में आने वाले एक–दो साले में पलिंडे पूर्णतः विलुप्त हो जायेगें क्योंकि इनकी जगह फ्रीज ने ले ली है। जिसका पानी पीने से स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। कच्चे घरों में पहले बिजली नहीं होती थी, ऐसे में इन घरों में गर्मी का इतना प्रकोप नहीं होता था, क्योंकि कच्ची दीवारें सूर्य की तेज और तीक्ष्ण किरणों को शोषित कर लेती थी। इस कारण गर्मी में ये कच्चे मकान काफी ठण्डे रहते थे। पहले बाखल हर घर में होती थी लेकिन अब पक्के मकान इस तरह बनने लग गए की बाखल उसमें सिमटकर रह गयी। शाम के समय जब सूर्य अस्त होने को होता था महिलाएँ शुद्ध पानी का लोटा लेकर घर के मुख्य दरवाजे के पास पानी की एक कतार एक पावे से दूसरे पावे तक लगाती थी। जिससे ग्रामीण भाषा में 'कार' कहते थे, इसका वैज्ञानिक कारण भी अलग–अलग मानते हैं। वर्तमान में 'कार' देने की परम्परा समाप्त हो गई है। पाष्चात्य संस्कृति के समावेष के कारण मृत्युभोज (मौसर) में भारी कमीं हुई है। वहीं जन्मदिन (चौसर) मनाने में वृद्धि हुई है, इसके साथ–साथ अषोच (स्यापा) भी बहुत कम दिनों के हो गए हैं। पूर्व में ये बारह दिनों के होते थे, अब तीन या अधिकतम पांच दिनों के हो गए हैं। इस प्रकार क्षेत्र में आर्थिक स्थिति में सुधार व बढ़ती पाष्चात्य संस्कृति के चलते अपनी परम्परा, रीति–रीवाज, संस्कृति व तीज–त्यौहारों को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं, या फिर उसमें बहुत बदलाव कर लिया है।

खान–पान–

चयनित शोध क्षेत्र में भू–उपयोग व शस्य गहनता से आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। आर्थिक स्थिति में सुधार से खान–पान में भारी बदलाव हुआ है। परम्परागत और आधुनिकता के चलते हमने उन खाद्य पदार्थों को अपना लिया है जो किसी भी दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए गुणकारी नहीं है। परम्परागत खाद्य पदार्थ गर्मी और सर्दी में अलग–अलग बनते थे। पहले घरों में हर दूसरे–तीसरे दिन दलिया या खीचड़ा बनाया जाता था, लेकिन वर्तमान में डबलरोटी, डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ, बिस्कुट व भुजिया जैसे खाद्य वस्तुओं को अपने जीवन में अंगीकार कर लिया है। दलिया खाना अब शान के खिलाफ समझा जाता है, पहले दलिया, लाप्सी, छाछ और राबड़ी बनायी जाती थी जिसमें अच्छी पौष्टिकता होती थी, अब स्थिति काफी बदल चुकी है। वर्तमान में छाछ मोल या दूसरे घरों से मंगवा लेते हैं, अब लोग पषुपालन जैसे व्यवसाय से भी दूर होते जा रहे हैं। नयी पीढ़ी के लोग मोल का दूध, दही और घी लेना पसंद करते हैं। इस तरह शोध क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में सुधार से खान–पान में भारी आधुनिकता का समावेष हुआ है।

वेषभूषा–

शोध क्षेत्र में आधुनिकता के चलते वेषभूषा में जबरदस्त बदलाव आया हैं, परम्परागत वेषभूषा अब बदल चुकी है। गांव हो या शहर परम्परागत राजस्थानी कपड़े केवल बुजुर्ग ही पहनते हैं, अब धोती पहनना धीरे–धीरे छोड़ते जा रहे हैं। वर्तमान में पजामा–कुर्ता भी लोग बहुत कम पहनते हैं, पहले बुजुर्ग अपने घर में तीन–चार बेटों के लिए एक ही रंग का कपड़ा पूरा–पूरा थान लाया जाता था और दर्जी सभी के लिए कुर्ता–पजामा बना कर देता था। आज की युवा पीढ़ी रेडीमेड जीन्से, टी–षर्ट, शर्ट, पेन्ट–कोट, शेरवानी आदि लाते हैं। वर्तमान में सूती कपड़े बहुत कम लोग पहनते हैं, पुरूषों के अलावा महिलाओं में भी आधुनिकता के चलते वेषभूषा में काफी परिवर्तन हो चुका है। घाघरा और कुर्ता फिर सिर पर बोरिया बांधकर घर से निकलने वाली महिलाएँ अब गिनती की रह गयी हैं। केवल बुजुर्ग महिलाएँ ही ये पोषाक पहनती हैं। नई पीढ़ी इन पोषाकों से कोसों दूर हैं, युवा वर्ग की लड़कियाँ आधुनिक फैषन की ओर अग्रसर हो रहीं हैं। वर्तमान में युवा वर्ग की लड़कियाँ जीन्से, टी–षर्ट, शर्ट, टॉप और शॉटस पहनती हैं। दोनों जिलों में की सीमा पंजाब से लगने के कारण पंजाबी संस्कृति का अधिक समावेष हुआ है, जिस कारण अब परम्परागत वेषभूषा की जगह सलवार सूट, साड़ी पहनने की परम्परा अधिक चल पड़ी है।

मनोरंजन

चयनित शोध क्षेत्र में भू–उपयोग व शस्य गहनता से जहाँ एक ओर आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, वहीं दूसरी ओर मनोरंजन के साधनों में भारी परिवर्तन आया है। पूर्व में सिर्फ रेडियो, टेपरिकॉर्डर और वी.सी.आर.ही मात्र मनोरंजन के साधन थे, धीरे–धीरे टेलीविजन, दूरभाष व सी.डी. प्लेयर के साधनों में वृद्धि होने लगी। वर्ष 1990 के आस–पास दूरभाष की ओर से पी.सी.ओ. की स्थापना हुई, दोनों जिलों में हर ग्राम स्तर पर पी.सी.ओ. स्थापित किए गए। आज विष्व में जहाँ आधुनिक संचार क्रान्ति आई है वहीं शोध क्षेत्र भी वंचित नहीं है। वर्तमान में टेलीविजन, मोबाईल, टेलीफोन आदि का व्यापक प्रचार–प्रसार है। पहले यह साधन केवल शहरी क्षेत्र तक ही सीमित थे, अब ग्रामीण क्षेत्र में भी आधुनिक संचार व मनोरंजन के साधनों में भारी वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में भी कम्प्यूटर, लेपटॉप, इन्टरनेट का व्यापक प्रसार हुआ है। वर्तमान में दोनों जिलों की पंचायत स्तर पर भारत निर्माण राजीव गांधी सूचना केन्द्र स्थापित है जहाँ इन्टरनेट ई–मित्रा सेवा आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अब संचार व मनोरंजन के

साधनों में इतनी वृद्धि हुई है, कि आज 6 साल से 60 साल का व्यक्ति आधुनिक संचार क्रान्ति से जुड़ा है। शोध क्षेत्र में परम्परागत मनोरंजन के साधन कबड्डी, चौपड़, कुष्ती, ताष आदि के खेलों में कमीं आई है, वहीं आधुनिक खेल क्रिकेट, शतरंज, बैडमिंटन, तीरअंदाजी और कम्प्यूटर गेम्स के साधनों में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

उत्तरी राजस्थान के नहरी सिंचित क्षेत्रों, विशेषकर इंदिरा गांधी नहर परियोजना (आई.जी.एन.पी.) जैसे जल परियोजनाओं के प्रभाव वाले इलाकों में भू–उपयोग में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने सामाजिक संरचना, जीवनशैली और आर्थिक गतिविधियों पर गहरा प्रभाव डाला है। निम्नलिखित बिंदुओं में इस परिवर्तन के प्रमुख निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं,कृषि पद्धति में बदलाव नहरों के माध्यम से सिंचाई सुविधा मिलने से परंपरागत वर्षा–आधारित खेती की जगह अब सिंचित कृषि का प्रचलन बढ़ा है। इससे नकदी फसलों जैसे गेंहूं, सरसों, कपास आदि की खेती में वृद्धि हुई है। आर्थिक स्थिति में सुधार उन्नत खेती और बाजार से जुड़ाव के कारण किसानों की आय में वृद्धि हुई है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर बेहतर हुआ है और उपभोक्ता वस्तुओं की खपत में भी इजाफा हुआ है।आवासीय एवं भौतिक संरचनाओं में परिवर्तन कृषि से प्राप्त समृद्धि के चलते पक्के मकानों, सड़क, विद्यालय, स्वास्थ्य सेवाओं आदि की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। ग्रामीण परिवेश में नगरीकरण की प्रवृत्ति उभर रही है जनसांख्यिकीय परिवर्तन खेती में रोजगार की संभावनाएं बढ़ने से बाहरी प्रवासियों का आगमन हुआ है, जिससे क्षेत्र की जातीय और सांस्कृतिक संरचना में विविधता आई है। महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन सिंचित कृषि और बढ़ती आय के कारण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक भूमिका में सकारात्मक बदलाव आया है, यद्यपि यह परिवर्तन अपेक्षाकृत धीमा है। पारंपरिक सामाजिक संरचना में ढीलापन सामूहिक श्रम प्रणाली, परंपरागत भूमिकाएं, और जातिगत निर्भरता कमजोर पड़ी हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता को बल मिला है। उत्तरी राजस्थान के नहरी क्षेत्रों में भू–उपयोग परिवर्तन ने केवल आर्थिक विकास को ही नहीं, बल्कि सामाजिक ढांचे को भी प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर इससे ग्रामीण समृद्धि और सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा मिला है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय असंतुलन, जल–जमाव और भूमि क्षरण जैसे नए सामाजिक–आर्थिक और पारिस्थितिकीय संकट भी उभरकर सामने आए हैं। इसलिए, इन परिवर्तनों का मूल्यांकन करते समय समावेशी एवं टिकाऊ विकास दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ–

- ✓ **जैन हुकम चन्द एवं माली नारायण लाल (2022)** "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, आई.एस.बी.एन. 978–93–94685–11–6, 32 वां संस्करण, पृ.स. 160–190.
- ✓ **जैन हुकम चन्द एवं माली नारायण लाल (2022)** "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, आई.एस.बी.एन. 978–93–94685–11–6, 32 वां संस्करण, पृ.स. 405–416.
- ✓ जैन हुकम चन्द एव माली नारायण लाल, राजस्थान का इतिहास,सस्कृति,परम्परा एव विरासत,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,आई.एस.बी.एन. 978–81–948052–3–6,पृ.360.
- ✓ **जैतली अजय कुमार एव कुशवाहा पूजा 2013** भारत मै जनजाति समाज एव उनकी कलाए अपनी माटी सस्थान चितौडगढ,आई एस एस एन 2322–0724, पृष्ट संख्या 1–2
- ✓ **डॉ. सैन कुमार राजेन्द्र (2019)** "बागड़ी समाज के रीति–रिवाज व विभिन्न रस्में" शोध श्री, अंक –1,आई.एस.एस.एन. 0974–7958, 2019 पृ.स. 33–45.
- ✓ **तिवारी कुमार विजय डॉ. 2001** छतीसगढ की जनजातिया,हिमालय पब्लिशिंग हाउस गिरगॉव मुम्बई
- ✓ दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र, औमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.–48.
- ✓ **दिपाली व कुमार मनोज (2009)** "झारखण्ड की जनजातिय लोक चित्रकला, अपनी माटी" अंक 41 आई.एस.एस.एन. 2322–0724, अ.जू. 2002 पृ.स.40–45.
- ✓ **प्रजापति कुमार बलवन्त (2020)** "जाति भेद पर डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के विचार" कृतिका अन्तर्राष्ट्रीय अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका, वर्ष–13, अंक–24–25–26,आई.एस.एस.एन. 0975–0002, 2020, पृ.स. 194–199.
- ✓ **प्रो. बोयत नेमिचन्द (2014)** "इतिहास के आइने में बावरी" राजस्थानी ग्रन्थागार, आई.एस.बी.एन. 978–93–84168–25–4, 2014 पृ.स. 37–38.

- ✓ **प्रो. बोयत नेमिचन्द (2014)** "इतिहास के आइने में बावरी" राजस्थानी ग्रन्थागार, आई.एस.बी.एन. 978–93–84168–25–4, 2014 पृ.स. 60–61.
- ✓ **पाण्डेय हरिराम, कुमारी प्रियकां एवं त्रिपाठी जे. एस. (2021)** "प्राचीन भारतीय समाज एवं संस्कृति में आसन पीठिका के महत्व का अनुशीलन" मेकल मीमांसा, वर्ष–13, अंक–02,आई.एस.एस.एन. 0974–0118, 2021, पृ.स. 118–123.
- ✓ **पाण्डेय कुमार उमेश (2021)** "आदिवासी समाज में धर्मातरण कि समस्या और हिन्दी उपन्यास" मेकल मीमांसा, वर्ष–13, अंक–02,आई.एस.एस.एन. 0974–0118, 2021, पृ.स. 162–168.
- ✓ परीहार जगमोहन सिंह, राजस्थानी भाषा और साहित्य का ओलोचनात्मक इतिहास, जोधपुर, मीनाक्षी प्रकाशन 1987.
- ✓ **बावरिया अजय (2018)** "बावरी जाति का इतिहास" सूर्य प्रकाशन मन्दिर बीकानेर,, आई.एस.बी.एन. 978–93–82307–25–9, 2018 पृ.स. 86–87.
- ✓ भारत का भाषा सर्वेक्षण खण्ड भाग–1 लेखक सर जार्ज अब्राहम ग्रियसन अनुवादक–उदयनारायण तिवारी, प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उतरप्रदेश, **प्रथम संस्करण 1959** ई. पृ. 324.
- ✓ भोलेराव, बी.एन. जनजातियों की बोली, समाज एवं सस्कृति, आराधना ब्रदर्श कानपुर, 124/152 सी, गोविन्दनगर कानपुर.
- ✓ मालवी सुरेश, राजस्थानी, लोक संस्कृति एवं लोक देवी–देवता, उदयपुर, हिमाशु पब्लिकेशन, 2009. पाण्डेय नीलिमा (2012) "दलित विजंस" वरिमा शोध पत्रिका मानविकी एवं साहित्य, अंक–03,आई. एस.एस.एन. 0976–8548, 2012, पृ.स. 338.–341.
- ✓ **मौर्य कुमार मनोज (2012)** "सहरिया जनजाति : अस्तित्व का संकट" वरिमा शोध पत्रिका मानविकी एवं साहित्य, अंक–03, आई.एस.एस.एन. 0976–8548, 2012, पृ.स. 352.–354.
- ✓ **मौर्य खोमोश 2023** मूरिया जनजाति का साकृतिक अध्ययन मानव विज्ञान एव जनजातीय अध्ययन शाला छतीसगढ आई एस एस एन 2456–5474 वोल–टप्प् पृष्ठ 1–2
- ✓ **मौर्य एस.डी.डॉ. (2021)** सामाजिक भूगोल, श्शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स युनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज–211 002 आई एस बी एन 81–86204–43–1
- ✓ **यादव सिंह वीरेन्द्र (2015)** "भोजपुरी भाषा में लोक संस्कृति के विविध सरोकारों का मूल्याकंन" कृतिका अन्तर्राष्ट्रीय अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका, वर्ष–8, अंक–15–16,आई.एस.एस.एन. 0975–0002, 2015, पृ.स. 187–193.
- ✓ **यादव शामू (2023)** "पार उपन्यास के संदर्भ में आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण" शोध ऋतु, अंक–01,आई.एस.एस.एन. 2454–6283, 2023, पृ.स. 45–47.

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY